

सूरी पोतेह सूत्र शोधिका - इस सूत्रप सूत्रे शोधिका की प्राप्ति सूरी पोतेह शोधिका के बियाजा में होती है।

- ये शोधिका के सूत्र में भी प्राप्त की जा सकती है।
- ये सूत्रों को शोधिका के अलग पथों द्वारा के शोधिकाओं में करता करती है।

व्यक्त सूत्र शोधिका - ये सूत्र शोधिका के पर्याप्त रूप में पायी जाती है।

- सूत्रों की अपेक्षा वहाँ से ये अधिक पायी जाती है।
- दानि पूर्ति हेतु ये आवश्यक होती है।

प्रकार - विभाजन दोनो की दायता के आधार पर -

1. सूरी पोतेह सूत्र शोधिका - उपस्थिति - अस्थि मज्जा, कर्षण कर्णों, अन्तर्गत अदि।
2. ओरिगो पोतेह सूत्र शोधिका - उपस्थिति - लिम्फाटिक ग्रन्थि B- T शोधिका (WBC)
3. सूरी पोतेह सूत्र शोधिका - उपस्थिति - मज्जा अदि।

उपस्थिति - - चित्रित की 4 - योग निदा, अगोत्र सूत्र।

सूत्र शोधिका के शोधक एवं अनुसंधान के साथ शोधिकाओं एवं शारीरिक कठिनायियों को दूर करने में उपयोगी है।

शुष्णप लघु क्रिया : शुष्ण की प्रत्येक अवस्था में प्राप्त की-

- जड़ क्रियाओं में 'शुष्णप लघु क्रिया' कहलाती है।
- इन लघु क्रियाओं में शरीर के लगभग प्रत्येक-भाग का नियंत्रण किया जा सकता है।

- क्रियात्मक होने की क्षमता के आधार पर इन्हें - दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

• शुष्णप लघु क्रिया -

- तीरी धोरे लघु क्रिया
- लघु धोरे लघु क्रिया

तीरी धोरे शुष्णप लघु क्रिया :

- नियंत्रण - 'अंडाणु तथा शुक्राणु' क्रियाओं के नियंत्रण में 'जाइगोट' (zygote) के शुक्राणु की नियंत्रण में

भागी - थी इसी प्रकृति होती है।

इस लघु क्रियाओं में पूरे जीव का नियंत्रण किया जा सकता है।

- मानव कत्व क्रिया में प्रयोग

- आर्य में 'शुष्णप लघु क्रिया' के 'की-लक्षण' की गई है।

हालांकि -

- शुष्णप लघु क्रिया प्राप्त करने के लिए शुष्ण की प्रकृति का रहस्य बना रहता है।
- चिकित्सीय शोध एवं अनुसंधान के क्षेत्र में प्रयुक्त है।

Q 3

3 A] रूतय की शिखा ऐसी कोशिका होती है नियम शरीर के कियी या अंग के कोशिका के रूप में विकसित होती है। शरीर विखण्डन होती है। रूतय कोशिकाएं कल्पनी हैं।

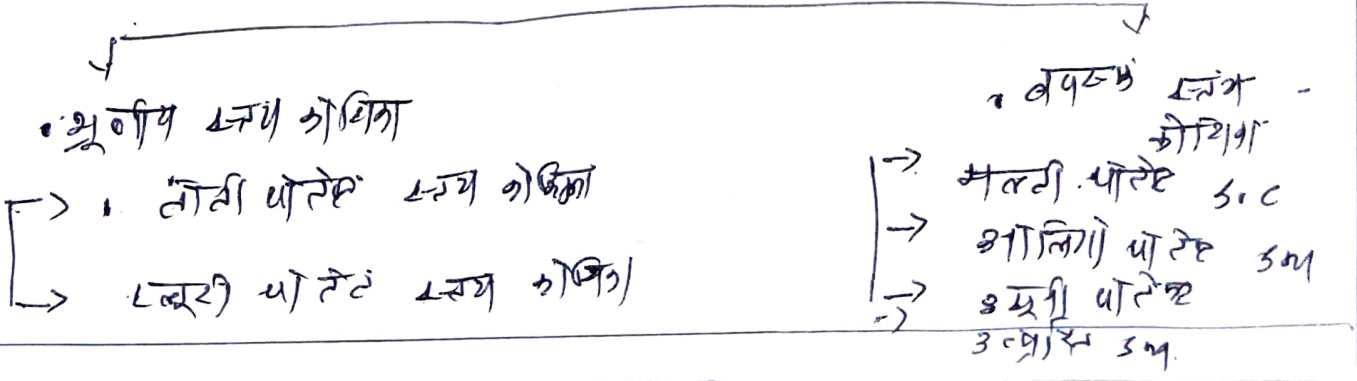
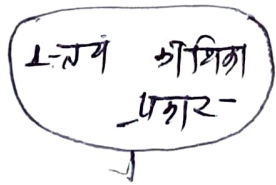
रूतय कोशिकाओं में रूतय लक्षण पाये जाते हैं कि ये शिखाओं को अपनी संरचनाओं को हार्थकाल तक बहाली - रहती हैं।

याथ ही ये कोशिकाएं कुछ निश्चित कार्यात्मक कर्तव्यों को ग्रहण करते हैं जैसे किशोरावस्था कोशिकाओं में निशेचन या रूतयों को बहाली है।

• रूतय कोशिकाएं बड़े कोशिका कीप जीवों में पायी जाती हैं। ये कोशिकाएं शरीर के वास्तुस्थिति भाग को बहाली करते हैं। उपयोगी होती हैं।

रूतय कोशिका :- प्रकार

रूतय कोशिकाओं की अपनी उत्पत्ति (मूल) - कार्य के आधार पर कई रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है।



2.1] TRIPS - यह आगत ट्रेड रिलेतेड ऑस्पेक्ट्स आण्ड इलीमिनेशन ऑफ़ ट्रेड बायर्स 'यू' है। यह WTO द्वारा संचालित - अंतर्राष्ट्रीय संघि है। इसमें बौद्धिक संपत्ति के अधिकारों के न्यूनतम मानकों को तय किया गया है।

यह विश्व व्यापक संगठन के सदस्य किये गये कई 45 राज्यों में से एक है।

TRIPS को 1994 में 30 रुपये मार्च तक से आया गया।

TRIPS मान संकर के बौद्धिक संपत्ति अधिकारों की चर्चा करता है।

1. प्रतिलिपि प्राप्त करने तथा उसे संचालित अधिकार (कॉपी राइट्स एंड रिलेतेड राइट्स)

2. ट्रेड मार्क

3. भौगोलिक उद्देश्य (G.O.I)

4. औद्योगिक डिजाइन

5. पेटेंट

6. इटै ग्रेटेड सर्किट की डिजाइन (Layout of Topography of Semiconductor Products)

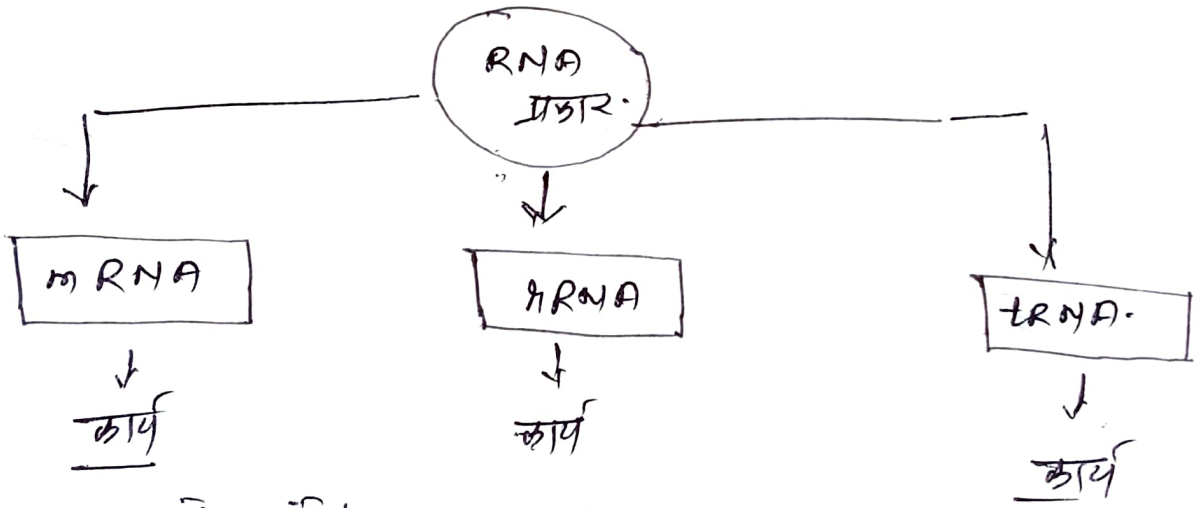
7. अप्रशिक्षित सूचनाओं का संचालन (Prohibition of Unfair Competition or Practices)

TRIPS WTO के सदस्य देशों को बौद्धिक संपत्ति के अधिकारों के अनुपालन के लिए बाध्य करता है। नियमों शरीर - शामिल है।

21] RNA एक एकल कुंडलित संरचना है, जो कोशिका द्रव्य में विद्यमान होता है। यह मुख्य रूप से प्रोटीन संश्लेषण की प्रक्रिया में भाग लेता है।

- यह एक 'गैर आनुवांशिक' पदार्थ है।
- यद्यपि यह कोशिका में जैव वाक्य (mRNA) अर्थात् यह आनुवांशिक पदार्थ की तरह कार्य करता है।
- RNA विभिन्न रूपों में पाया जाता है।

RNA के प्रकार - कार्य के आधार पर इनका वर्गीकरण तीन प्रकार में किया जा सकता है।



• DNA से आगे के सूचनाओं की प्रोटीन संश्लेषण करने पर लाने का कार्य

• 21 उपोपयोग के संरचनात्मक भागों में सहायता प्रदान करना

• अमीनो अम्ल को - प्रोटीन संश्लेषण करने पर लाना

• यह प्रयोग (मास्लीप जीव विज्ञान) को tRNA की संरचना के अध्ययन के लिए 1968 में विरेनार्क तथा स्टार्क होले के साथ 'नोबेल' पुरस्कार मिला।

24] CDAC का अर्थ - सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट आउटसोर्सिंग - कंप्यूटिंग है।

- स्थापना - 1988 युवा
- उद्देश्य - 'सुपर कंप्यूटर' का निर्माण करना
- फोकस - इलेक्ट्रॉनिक्स और युवा प्रौद्योगिकी

चर्चा - यह एक अनुसंधान एवं विकास संगठन है।

• सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में CDAC की भूमिका

- सुपर कंप्यूटर का निर्माण इलाहाबाद परम 'आदि'
- परम 8000 - 1991 में विकसित - 'शान' का पहला 'गीगा' स्तर का कंप्यूटर
- परम - 10000 - 1998 में विकसित - क्षमता - 100 - 'गीगा फ्लॉप' - पीछे कंप्यूटिंग मार्केट का सुपर कंप्यूटर
- परम पट्टा - वर्ष 2012 में विकसित - क्षमता - 4 टेरा फ्लॉप
- परम युवा - वर्ष 2018 में विकसित - क्षमता - 54 टेरा फ्लॉप
- प्रत्यक्ष - वर्ष 2018 - शान का मार्ग तेज सुपर कंप्यूटर - गति - 6.8 पीता फ्लॉप

इस सुपर कंप्यूटरों की क्षमता में मौलिक संशुद्धि पूर्व ज्ञान एवं सुसज्जित जैसे आपका प्रबंधन में व्यापक संसाधन मिल सकता है।

26] ने 4 मीटरों विभिन्न रूप से 'मीटरिंग' व 'बिलिंग' का समझौता है।

• यह समझौता पावर विद्युत कंपनियों (डिस्ट्रिब्यूटर्स) व उपभोक्ताओं के बीच होता है।

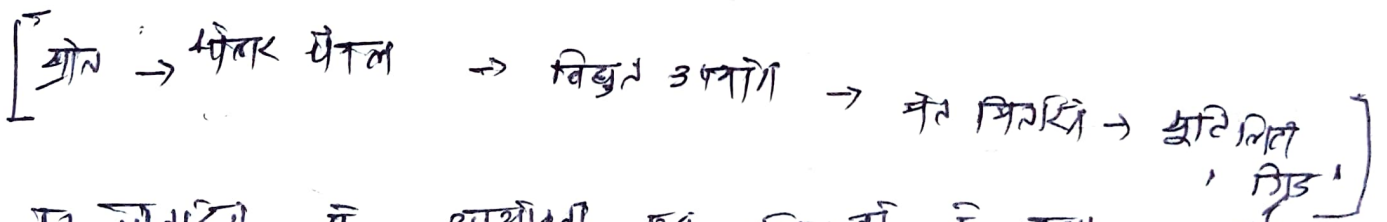
• इसके अन्तर्गत कंपनियों ने ऐसी तकनीक विकसित की है जिसे अपनी वन पर मोटर प्लान में कमी हुई बिजली 'ग्रीड' को बेची जा सकती है।

• इसके लिए मोटर प्लान के माध्यम से 22 क 'मीटर' लागू जाते हैं। यह मोटर बिजली विद्युत कंपनियों के द्वारा दिया जाता है।

• मोटर वर किन्ना मीटर बिजली का उत्पादन हुआ और किन्ना खपत एवं किन्ना ग्रीड में गई, इसका हिसाब रखा है।

• इससे डिस्ट्रिब्यूटर्स व उपभोक्ताओं को प्रकृत की गई बिजली का बर्ताब भी रखा जाता है।

विद्युत प्रणाली

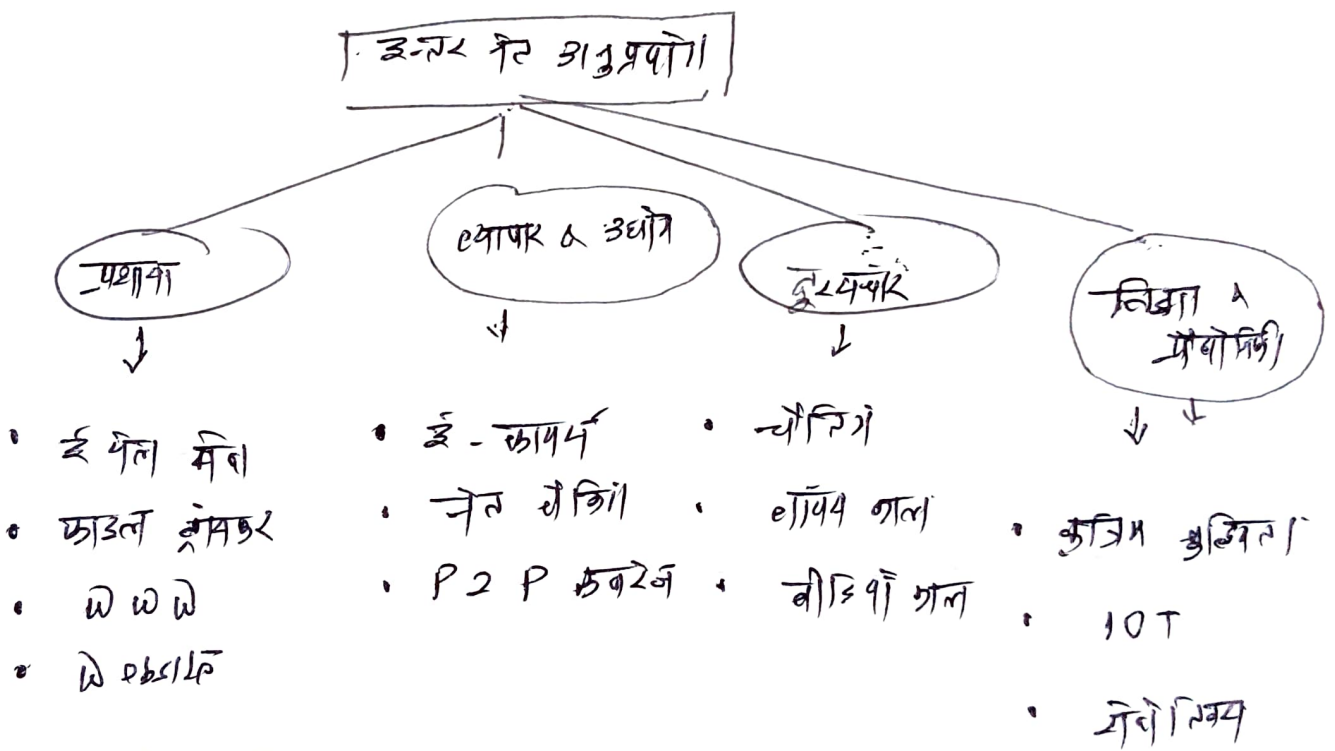


जब मोटरों में उपभोक्ता एवं विद्युत के प्रत्येक परस्पर रूप से और ऊर्जा का उत्पादन, वितरण एवं उपयोग को सुनिश्चित किया जा सकता है।

2F] इन्टरनेट में आणविक परस्पर संबद्ध नेटवर्क (इन्टरनेट) का समूह इन्टरनेट कहलाता है।

• इन नेटवर्क का आणविक जोड़ने का अर्थ 'ISP' (इन्टरनेट प्रोवाइडर) सम्भन्धित करती है।

इन्टरनेट का प्रयोग वर्तमान समय में जीवा के हर क्षेत्र में देखा जा रहा है। कुछ प्रमुख अनुप्रयोग निम्न लिखित हैं :-



इन्टरनेट ने शैक्षिक संचार प्रणाली के माध्यम से लोगों को जोड़कर मासिकी का एपी कर कर उनके माता पिता और दाधिकों को मुनिश्चिन्त करों में सर्वोपरि सुनिश्चित किया है।

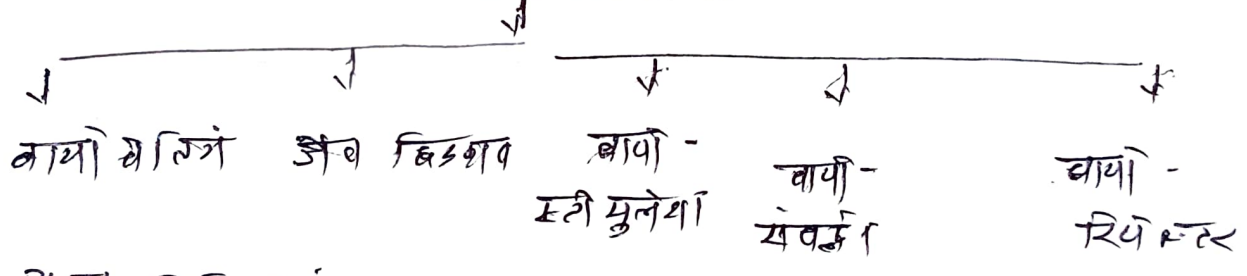
भारत में भारत नेट परियोजना (ग्राम पंचायत) डिजिटल भारत अभियान के माध्यम से जन जन तक इन्टरनेट माध्यम में प्राथमिक संसाधनों को पहुंच मुनिश्चिन्त कर रही है।

2E] जैव उपचार का अर्थ सूक्ष्म जीव, जीवाणु, कवक आदि का प्रयोग कर प्यथिषा मंडुसर्जो को कम विकसित पदार्थों में अपघटित करना जैव उपचार कहलाता है।

- इसके द्वारा किया विशेष रूप से घर पर पचा हुआ अपघटित पदार्थों को हानि रह प्रभाव को समाप्त किया जा सकता है।
- जैव उपचार 'चक्र' के सिद्धांत के माध्यम से कार्य करता है।

प्रमुख जैव उपचार तकनीकी

जैव उपचार तकनीकी



अन्य विधियाँ

- वायो-रिफाइजेशन तकनीक
- आकल जैफर
- आयली बोय D

आकल जैफर :- अनिवार्य रूप से यह जैव चक्र के अन्त में स्थित है। जो एक वाक्य (कवक) के साथ स्थिर और स्थिर होता है। यह कच्चे तेल एवं तैलीय पदार्थों में मौजूद कवक द्वारा वायो-रिफाइजेशन तकनीक से अर्थात् अन्त में जल से परिचालित कर-पया गया उपचार और संबंधित में उपयोगी है।

- 2D] कम्प्यूटर द्वारा वास्तविक जीवन की आवाज को इकाई में परिवर्तित करने का प्रयास किया जा रहा है।
- यह कम्प्यूटर द्वारा वास्तविक आवाज को डिजिटल और फिर इसे वास्तविक आवाज में बदलने के लिए उपयोग किया जाता है।
 - यह वास्तविक आवाज को बिजली के माध्यम से प्रसारित करने का एक तरीका है, जो वास्तविक आवाज को बिजली के माध्यम से प्रसारित करने के लिए उपयोग किया जाता है।
 - कम्प्यूटर इसके कम्प्यूटर को आवाज को प्रसारित करने, तथा इसे बिजली के माध्यम से प्रसारित करने में वास्तविक आवाज को प्रसारित करने का एक तरीका है।

आनु प्रयोग :

1. पर्याप्त कि स्तर पर व्यवस्थाओं को बनाना
2. सूचनाओं का आकार '0 1s' और 1 का
3. एक साथ प्रयोग
सूचनाओं को सुरक्षित स्थिति में रखना
इसे आवाज में बदलना, एक साथ उन्हें रखना
पर अवलोकन करना।
4. कार्य का प्रमेय बनाने में सहाय
5. ऑनलाइन मासिकों को एक प्रतियोगिता शुरू करना
6. 'गूगल' ने 'वास्तविक सुधीयों' का एक प्रयोग किया है।

इसके अलावा 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' '101' आदि में भी इसका प्रयोग किया जा सकता है।

20] भारत के पर्याप्त वैज्ञानिकों में एक प्रमुख नाम राजा-
 रमन्ना का भी है। राजा रमन्ना का जन्म -
 कर्नाटक में हुआ। 1925 में जन्म रमन्ना ने
 विज्ञान एवं प्राणी विज्ञान के नाम से मह-चतुर्थ
 योगदा दिया। उनके माता का देस है कुश कुश
 1973 में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया।
 विज्ञान एवं प्राणी विज्ञान में उनका प्रमुख योगदान -
 निम्न लिखित हैं :-

1. पर्याप्त ऊर्जा एवं तबियत के बिना ही संश्लेषण वैज्ञानिक शोध का निरीक्षण कर सकना देना।
 2. भारत के पहली पर्याप्त प्रयोगशाला 'स्यार लिगे बुल' के, बुल के मुखिया के रूप में।
 3. स्याम मंत्री के वैज्ञानिक मन्त्रालय के रूप में।
 4. DRDO प्रमुख का कार्यभार संभालना।
 5. नाथ' कीप विस्फोट के नाम से।
 6. 'ध्रुव' रिपेप्टर बनाये में विशेष योगदान।
 7. स्याडलिगां बुल का प्रयोग।
 8. पुनर्जन्म लया - वे सुपर आर्कि एनर्जिक उत्पत्ति एवं वेक्टर चिह्नित।
 9. आत्म कथा - 'ईअर्थ आफ जिला गिनेज'।
- भारत सरकार द्वारा उनके योगदान को अधिक एवम्बीय चर्चा के लिए इ-पौर (पत्र) में राजा रमन्ना को एक एडवार्ड -
 देवचानाजी की सम्मान की।

अर्जा की नवीन तर्कीकी एवं उद्वरण मूलक कर्तो मे-
मकंर का वानर कर्ता पड एता है।
विदेशो मे आवात पर आर्थिक बोझ बन जा एता है।

3 तर्कीकी - कौशल एवं जाग लुकरा अर्जा के उद्वरण,
प्रवधा एवं मरंकर मरंकर तर्कीकी जा एता अंगन
की कमी पायी जमी है अर्जा के प्रवधा मरंकर
जा का अवात का कर्ष मरंकर मे जाग कर्ता का अवात

4 - पर्या कर्ष मरंकर युतीकरण - पर्यापगत अर्जा श्रतो मे-
अत्यंत अर्जा के आर्थिक मरंकर ए मे चापु मरंकर एवं
वेष्टिक तापता मे कर्ष हो एती है।

5: नवीन आर्थो शिन एवं अव्ययता - अर्जा के वैश्विक
मोती मे अर्जा उत्पाद कर्तो के लिके वन मरंकर, वाप
अचिदा का म्नाय तेजी मे हो एता है। जो अर्थिक मे
व्यापक लावा-य मरंकर एवं पार शिक्ति अस्कुता को-
जय दे मरंकर है।

6. वर्ती उपयोग वदी मरंकर - मरंकर मरंकर के
अधो उद्वरण की प्रवृत्ति ने इवारे जीव शौकी आरि-
ताके व्यवहार मे व्यापक वदलाव मरंकर आये है।

इन मुदधो के अतिरिक्त मरंकर म्नाय को मुनिशिक कर्तो
के लिके जीव शौकी मे वदलाव आरि अर्जा की-
अव्ययता को मरंकर इर मरंकर प्रवधा की मरंकर है।

Q B] - ऊर्जा किसी भी देश के विकास का इंजन होती है।
 किसी देश में प्रति व्यक्ति होने वाली ऊर्जा ही विकास-
 कारक विकास का मूलक है। उन्हा ही तभी
 संवर्ध होता है। भारत जैसे देश में आते विदेशी आ
 प्राप्त करी के लिए ऊर्जा प्रकथा की मदद आना है।
 ऊर्जा प्रकथा के लिए कठोर उपाय और निता अ
 जकन है।

भारत में ऊर्जा प्रकथा :- गोवर्धी चोकरा - कठिन -
वायी धनजी एवं पर्याय्य संकषण की कमी।

• कार्यालय के प्रयोग में विनली उल्का।

ऊर्जा प्रकथा में संवर्धन मुद्दे :-

भारत में कमी जन संख्या तथा ऊर्जा के उपयोग की-
 वली मांग के साथ पर्याय्य पुर्नविद्यी भी उरर
 षयो सुखर हो रही है।

ऊर्जा प्रकथा में सहायक मुद्दे -

1) वली आकषी - भारत की आकषी विद्य में इयरे कम में
 है। इस कारण ऊर्जा उपयोग करी की दर भी भारत में
 वली है। लिहाजा आकषी के उपयोग के लिए प्रचुर
 मात्रा में ऊर्जा का उत्पाद करना आवश्यक हो जाता है।

2. विद्य आकषी वृद्धि दर - भारत की विद्य दर महान दर
 में व्यापक विस्तार देखी जा रही है। लाघिन धर्म दर
 9 में वायविक शक दर 4 के आसपास है।

2A] वायकलैश संयक प्रणाली में वाई कार्ड (Wi-Fi) और लाई कार्ड (Li-Fi) प्रयोग कर सकते हैं।

इन दोनों तकनीकों में कुछ विषयों पर अंतर-अंतर स्पष्ट रूप से आते हैं।

क्र. सं.	वाई कार्ड (Wi-Fi)	अंतर बिंदु	लाई कार्ड (Li-Fi)
1.	रेडियो तरंगों	घोरा	दृश्य प्रकाश (Visible Light)
2.	वायुमय माध्यम के माध्यम से	क्षीपा स्थिर	प्रकाश की तरंगों की प्रकृति तक
3.	स्वच्छता	स्थिर	अपेक्षा कम सुरक्षा
4.	हैजिय में मुक्त	सुरक्षा	हैजियों में सुरक्षा
5.	प्रदूषित	सुरक्षा	आवृत्तियों LED में 4 क्वार्टर प्रतिनिधि
6.	प्रकाश के प्रसारण	सीमाएं	प्रकाश की अवस्थिति अनिश्चित

इन दोनों वायक प्रणालियों की अपनी-2 विशेषताएँ एवं सीमाएँ हैं। फिर भी दोनों के जीवा लक्ष्य और कार्य की दक्षता एवं सुरक्षा वगैरह वहाँ से दोनों की तकनीक - संशोधन कर रहे हैं।

1M] QR code का अर्थ 'रक्ति प्रक्रिया पहचान वाली' है।
 • यह एक भ्रूण पहचान आदिवासी - बार कोड-
 होता है।
 • उपयोग - व्यापक रक्ति निष्पत्ति जैव - उत्पत्ति -
 संकेतक के रूप में।

1N] SWAN का पूर्ण रूप 'स्वतः पाठ्य शिष्टा नेटवर्क'
 है। यह एक ई-गवर्नेंस की परियोजना है,
 जिसमें मूल्य विचारों, उपकरणों को जोड़ दिया है।
 • 51 जिलों, 09 मर्यादित उपकरण तथा 11 केंद्रों -
 SWAN में शामिल है।

1O]. प्रवाल अम्ल का आशय उन अम्लों में है जिनका
 PH मान 1-3 तक होता है।
 ये जल में विघटित होकर हाइड्रोजन आयन (H⁺) -
 प्रदान करते हैं।
 • इस रचना - हाइड्रोक्लोरिक अम्ल - HCl H₂SO₄ आदि

1 H] PSLV - XL का अर्थ क्षुब्ध प्रयोग या क्षुब्ध आँसु भरे हैं।

- इसमें 6 इंधन आग बूझ 1 लगे लगे हैं जो अरु चला धारों की अर्थ है करने है।
- PSLV - XL का उपयोग - चंद्रमा, मंगल या ये

1 i] जैनी कण का रसायन अर्थ किसी पदार्थ के ऊपर का आकार 10^{-9} मी है।

- जैनी कण एक मी माँ जैनी मात्र तक अरु रसायन कण होते हैं।
- अनु प्रयोग - सूर्य अर्थ। चिकित्सा (NDDC) कृषि और अन्य, अंतरिक्ष प्रयोग

1 j] क्षेत्र विधि गणित की एक शाखा है जो 'मापा' में प्रयुक्त है।

- मापा में विद्यमान : ज्यामितीय आकृतियों के - दोगुना एवं अथवा के घूर्णन की विधि एवं उनके प्रयोग में प्रयुक्त होती है।

1 k] रासायनिक रिपोर्ट में अर्थ एवं अर्थ अर्थ का अर्थ करने तथा परिभाषित एवं प्रयुक्त अर्थ का अर्थ करने है।

1 L]. जब आसोफि तब एवं विद्यमान की विधि एक मंगा होती है तो उसे मंगा अर्थ - कहा जाता है। [W = F. 1.5]

- 1D] माइग्रेटिंग केवल यूकेरियोटिक कोशिकाओं में पाया जाता है।
- कार्य - प्रथम क्रियाओं का प्रारंभ।
 - कोशिकाओं का ऊर्जा स्रोत (ऊर्जा ATP) के रूप में संबंधित रहती है।

- 1E] अन्तः-विविधता और विविधता मापन की एक प्रणाली है।
- क्रिया प्रवृत्त क्षेत्र में प्रजातियों की कुल संख्या का अन्तः-विविधता करने है।
 - विविधता क्षेत्रों के अन्तः-विविधता के तुलनात्मक-अन्वेषण में उपयोगी।

- 1F] कार्बन डायऑक्साइड का अर्थ क्रिया संख्या, 0.4 प्रति घंटा उत्पाद द्वारा क्रिये जाने वाला कुल कार्बन अन्वेषण है।
- कार्बन का अन्वेषण CO_2 या ^{14}C द्वारा गणना के रूप में होता है।
 - कार्बन डायऑक्साइड, पारिस्थितिकी डायऑक्साइड का एक अर्थ है।
 - यह 'जीवाणु' विज्ञान का अर्थ है।

1G]

पारिस्थितिकी पर चिह्न की गणना की आने विधि का
जिनमें इतरात्मक अव्यय का प्रयोग कर गणना की गति
है।

गणना विधि - - - - -

- जीवमंडल की उपलब्धता
- गडुडी चोत्र की घना
- जैविक उत्पादकता की गणना

पारिस्थितिक पर चिह्न का महत्व

- मानव के 'उपयोग' के स्तर की जाँच
- अर्जा उपलब्ध स्तर 'माप' का सूचक
- जैविक उत्पादकता का सूचक

पारिस्थितिक परचिह्न किसी देश की आर्थिक विकास
एक जीवमंडल की खेती की अवस्था को पर्यावरण पर मानव
क्रिया कलाप का स्तर
प्रदर्शित करने प्रयास को भी इंगित करता है।

30] पारिस्थितिकी पद चिह्न पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्रों पर मानवीय प्रभाव का एक मापक है।

यह इंसान की आगे की तुलना पृथ्वी की पुनः-उत्थान की क्षमता में करता है।

यह मानव-आजदीक द्वारा उपयोग किये जाने वाले-संसाधनों के पुनः उत्पादन एवं स्वयं-उत्पन्न अपशिष्ट के आस्योपस्य और अन्य क्षतिग्रस्त वास्तु-सौधों के लिए जल्दी-जल्दी-उत्पादन शक्ति और मनुषी क्षमता की मापन की दक्षता है।

वर्ष 2006 के लिए मनुष्य जाति के द्वारा पारिस्थितिकी पद चिह्न की 14 पृथ्वी-मूल-आनु-सम्पत्ति-सिद्ध-संसाधनों-अथवा-शक्ति-जाति-पारिस्थितिकी-संसाधनों-का-उपयोग-पृथ्वी-मूल-आने-सृजना-की-तुलना-में-14-गुणा-तेजी-में-करने-है।-प्रति-वर्ष-521-परिष्कृत-की-गणना-की-जाती-है।-21-पुस्तक-21-द-इसके-आंकड़े-का-एकत्र-एवं-प्रकाशन-करना-है।

नवीन-तम-आंकड़ों-के-अनुसार-पारिस्थितिकी-पद-चिह्न-1.6-है।-इसकी-गणना-जमा-ए-संसाधन-सूचकांक-में-की-जाती-है।

आंकड़ों-के-एकत्रण-एवं-आके-विश्लेषण-के-अनुसार-पारिस्थितिकी-पद-चिह्न-की-गणना-में-तुलनात्मक-रूप-में-अंतर-पाया-जाता-है।

पारिस्थितिकी-पद-चिह्न-की-गणना-की-इस-विधि-है।

1. Reduce - कमी करना - और शिष्ट पदार्थों को डाले
छोटे-छोटे आपस में बॉलर इनकी पुनः उपयोग
की प्रक्रिया में लाने का कार्य करा है।

2. Recycle - पुनः चक्रण - इसे नष्टीकरण के वास्तव
में अव्यर्थों को पुनः चक्रित कर उपयोग में लाने
में है।

3. Reuse. पुनः उपयोग - इस विधि में उपयोगी -
आवष्ये का प्रयोग कर पुनः उपयोग में लेना है।

वि. 6 गणना की अन्य विधियाँ

विधियाँ

↓
कम्पोजिंग

↓
कचरा पत्रों से
गडदे

↓
मैग्नीटिक

कम्पोजिंग - जबकि आसियटों का कृत्रिमिक यन्त्रण में
जोकि क्षीण की यन्त्रण में प्रकृतिक विधा जाता है।

कचरा का गडदे - कचरे के गडदे का निपटि कर एक
कचरे का संग्रहण विधा जाता। निदाना का ही प्रकृतिक
में यन्त्रण करने के लिए धाने-रुड गडदे कापे जाते हैं।

मैग्नीटिक : शक्ति उच्च गणना की प्रकृतिक में गडदों को
जगत्तर चुंबक रूप में परिचरित विधा जाता है।
इस विधियों के आसियटों जीव शौची और यन्त्रण
बगकर प्रकृतिक विधा जा सक्त है।

3 B] अपशिष्ट से आसक जीव जैविक - अजैविक पदार्थ होते है जिहा उपयोग एवं उपयोग प्रवर्धन एवं कर लिया जाता है। उन पदार्थों का प्रत्यक्ष रूप में उपयोग संभव नहीं हो सकता है।

इन अपशिष्टों में लैच एवं तत्स अपशिष्ट जैसे ई कचरा, चिकित्सीय कचरा एवं धरेख नालियां एवं आँसोशिक कचरा सम्मिलित है।

इन कचरों में पर्यावरण एवं आकीय दुष्प्रभाव - धारक होते है, जो स्वास्थ्य एवं प्रवर्धन पदार्थों को उत्पन्न करते है। इनका निवारण एवं प्रवर्धन आवश्यक है -

अपशिष्टों का वर्गीकरण : उपयोग एवं प्रकृति के आसक इनका वर्गीकरण निम्न वत किया गया है -

1. होय अपशिष्ट - वे पदार्थ जो किसी जैविक प्रक्रिया का विद्यमान नहीं किये जा सकते है। होय अपशिष्टों में पापक शृंखला चरणों को मिलती है। जैसे - इलेक्ट्रॉनिक कचरा, चिकित्सीय उपकरण, धरेख इत्यादी की पायाश्रिणी आदि।

2. तरल अपशिष्ट के अन्तर्गत औद्योगिक अचर, धरेख नालियां पाणी के कचरे आदि।

होय अपशिष्ट प्रवर्धन की विधिपा 'नी सर्व प्रकृत्यताये प्रयोग में लाई जा रही है - निम्न वत है -

a. 3R प्रकृति - इनके अन्तर्गत अपशिष्ट पदार्थों को 3R Reduce Recycle Reuse.

ये समूह जगत की अपनी ऊर्जा प्रवाह कर रहा है, ये जैविक एवं अजैविक जगत के उत्पादों, विशिष्ट विधत में समक होता है।

नवी कठोर अर्जा ग्रेन के रूप में 'शौर अर्जा' का- विश्व भर में नये आविष्कार एवं अनुसंधानों- ज्यादा में ज्यादा उपयोग करने की शक्ति का सिद्ध हो रहा है।

मातन में शौर अर्जा की व्यापक संधावा में मौजूद है।

- मातन की विशाल योगात्मिक स्थिति - उष्ण कटिबंधीय जलवायु वाला देश है, जहाँ वर्ष भर सूर्य संच- संपन्न तक अवस्थिति दर्ज करता है।
- एक अनुयायी के अनुसार देश के लगभग सभी हिस्सों में औसत 4-7 किमी घंटा प्रति घंटा मोटर प्रति घंटा शौर विकाराण प्राप्त होता है।

मातन में प्रवाशः

- मातनीय शौर अर्जा निगा में वर्ष 2023 तक 7523 लख शौर अर्जा उत्पाद का लक्ष्य रहा है।
- मातन में मोटर कारों की संख्या - गैर, लक्ष्य- नये मोटर कारों एवं कारों वीन्ताफि शैली का- उत्पादन
- थार का प्रकल्पनीय - शौर

उपयोग - विजली उत्पाद
स्वाय पशु में
पर्यावरण संचालन में

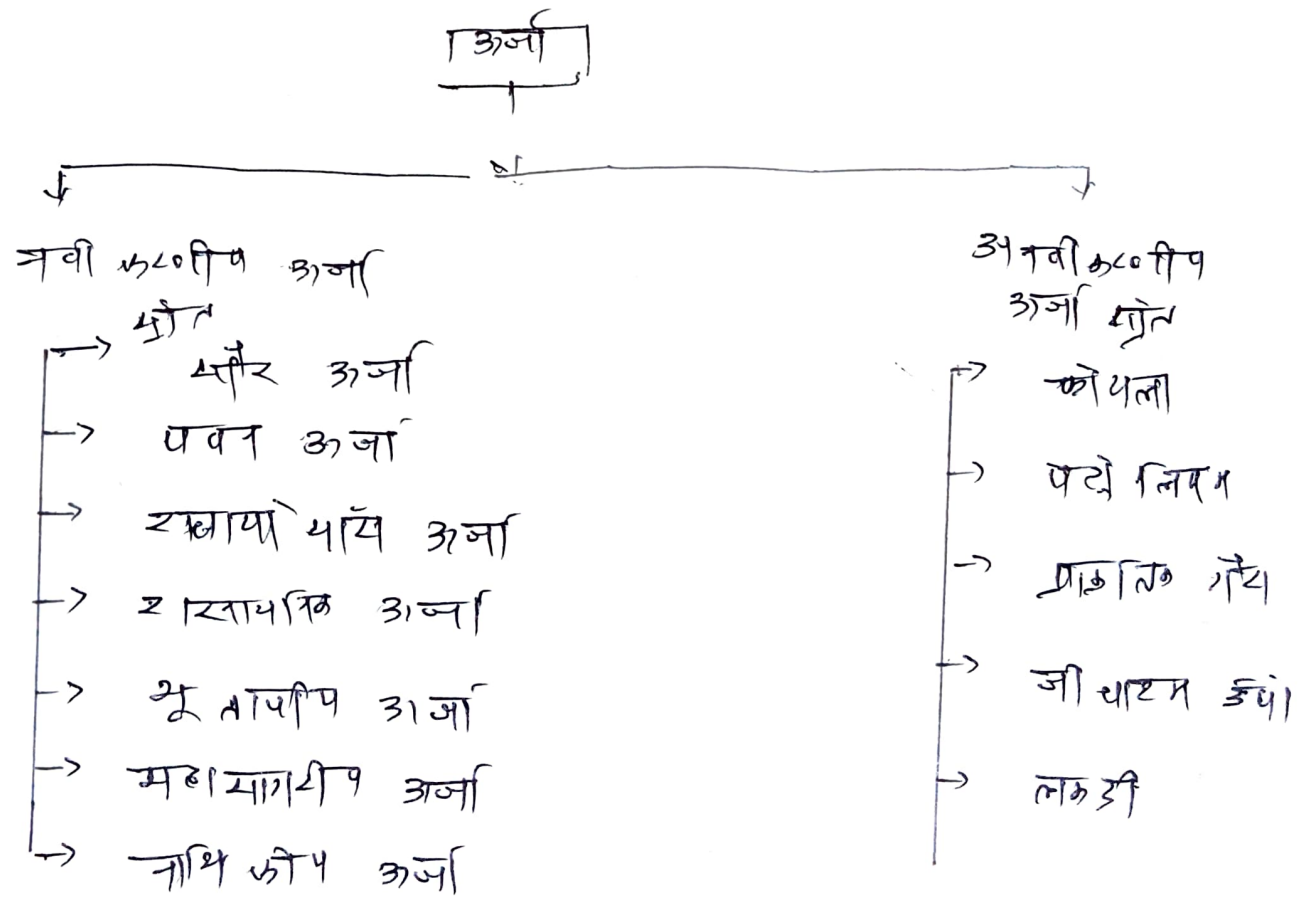
संस्कार में शौर अर्जा के निगम में गैर-नवीन का आभरण एवं अनुसंधान जाय है।

Q. 3

3A] ऊर्जा आर्थिक विकास और जीवा लक्ष वेक्टर वारा का आर्थिक आधार है। ऊर्जा उत्पादन का क्रिया क्रिया है। ऊर्जा के आर्थिक विकास का मुख्य - होना है। उच्च ऊर्जा में उत्पादन और उपयोग के रूप में मुक्ति दिखान कर क्रिया है। अर्थ-व्यवस्था में ऊर्जा के उपयोग, एवं उत्पादन आदि क्षेत्रों का समाधान किया जा सकता है।

प्रकृति द्वारा निरमित रूप में ऊर्जा प्राप्त की गई है। ऊर्जा के स्रोतों को प्रकृतिक नवीकरणीय एवं अनीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

ऊर्जा स्रोतों का वर्गीकरण



सौर ऊर्जा एक अक्षय ऊर्जा स्रोत के रूप में मानी

• यह गर्म धारा ठंडी बना धाराओं को प्रतिस्थापित करती है।

• इससे पृथ्वी पर के जल का तापमान प्रायः 10°C तक बढ़ जाता है।

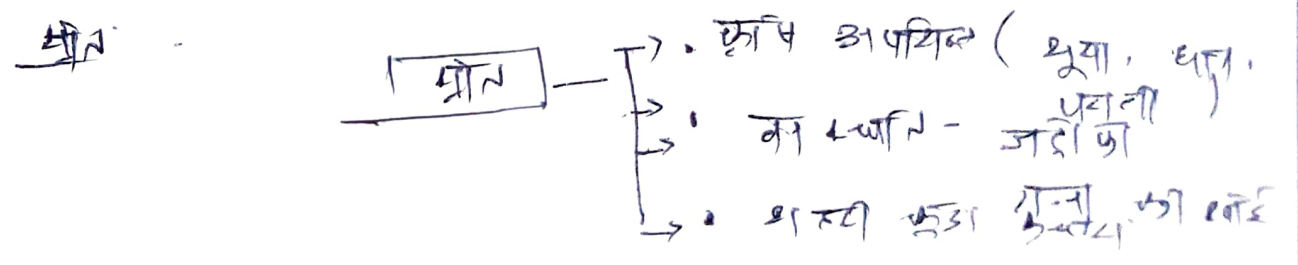
• इस प्रक्रिया से जहां समुद्री जल के वाष्प की-रूप में अधिक मात्रा में वाष्पित हो आर्द्रता बढ़ती है।

• इसी से पृथ्वी पर वायु परतों पर पर्यवेक्षण से ये-विशेषताएं उद्घाटित होती हैं।

प्रभाव - कभी कभी अति शक्ति एवं ऊष्मा अंतरण होता है। जैसे - अमेरिका के फ्लोरिडा में शीत सर्त।

• शीत धारा - आस्ट्रेलिया (पूर्वी तट), उडों नक्षत्रादि।
• शीत प्रवाह - पैन्यवे बर्फ (प्रवाह) अमेरिका के उत्तरी तटों पर प्रवाहित होता है।

24] ऊर्जा के त्रै पर्याप्तता शक्ति से महासागरीय अर्जा, भूतपीय अर्जा, पृथ्वी अर्जा, और अर्जा शक्ति किंचित-जाते-हैं। - जैविक उत्पादों से निर्मित बायो मॉस से अन्य त्रै पर्याप्तता अर्जा का पर्याप्तता संरक्षण से अनुसंधान एवं पर्याप्तता है।
बायो मास (जैव अर्जा) कार्य निरंतर प्रतीक से उद्घाटित अर्जा का साधन है।



इसके साथ साथ के चार नए शीशों के मुख्य कलिक-
उपग्रहों को कदा ये ख्याल किया जा सकेगा।
D LV - MK-3 विशेष ध्यान.

D LV - MK-3 के लक्षण -

- ऊंचाई - 43.43 मी.
- लिफ्ट आंक भाव - 640 तन
- स्तर - 3 चरण
- ईजा - क्षायो जेति - ईना TE-20

इसके गुणों पर ध्यान के कारण 15R0 द्वारा डरों-

'Fat Boy' नाम दिया गया है, क्योंकि इसका वजन -

640 तन है, जो लगभग 200 क्षणों के वजन के-

व्यति है। साथ ही अंतरिक्ष उपग्रह प्रणाली में -
आत्म निर्भर बनाने में सक्षम बना।

OK] अन्न नौगा, एक जलिव मौसम तंत्र है। जो -
विश्व के अनेक हिस्सों के जलवायु के साथ सम्बन्धित

मातृ का प्रभाव करता है।

जिसके कारण मातृ कयनोर पड जाता है।

जिससे भूख की स्थिति बढती है, तथा यत...

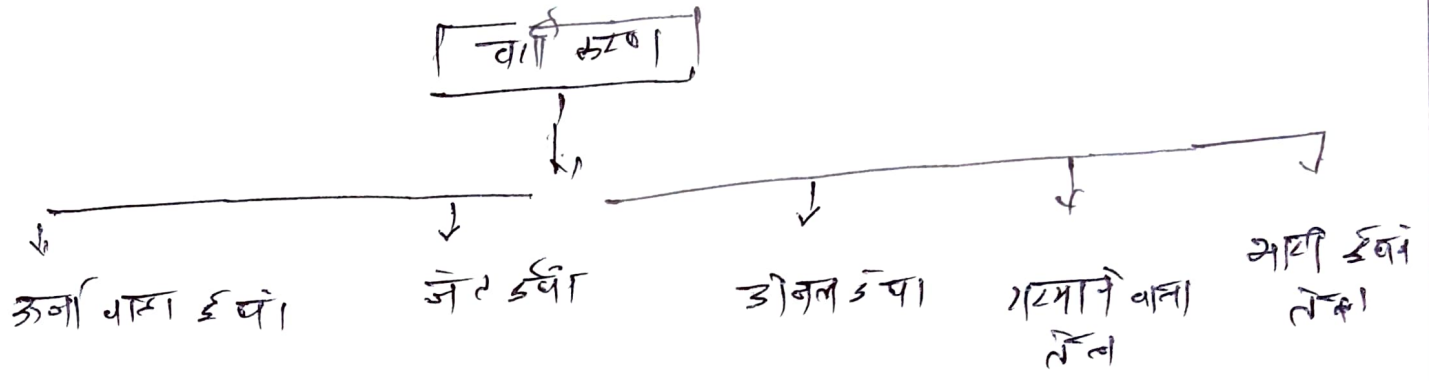
मातृ को निर्लक्षित करता है।

ध्यान:-

अन्न नौगा एक गर्म महासागरीय धारा है, जो -
कि पूर्व प्रयात महासागर में फेरु तन के निकल सक्षम

दियवर धार में प्रकट होती है।

पेट्रोलियम का वर्गीकरण : उच्चोक्ति के आधार पर विभिन्न विभिन्न मनुष्यों में वर्गीकरण किया जा सकता है.



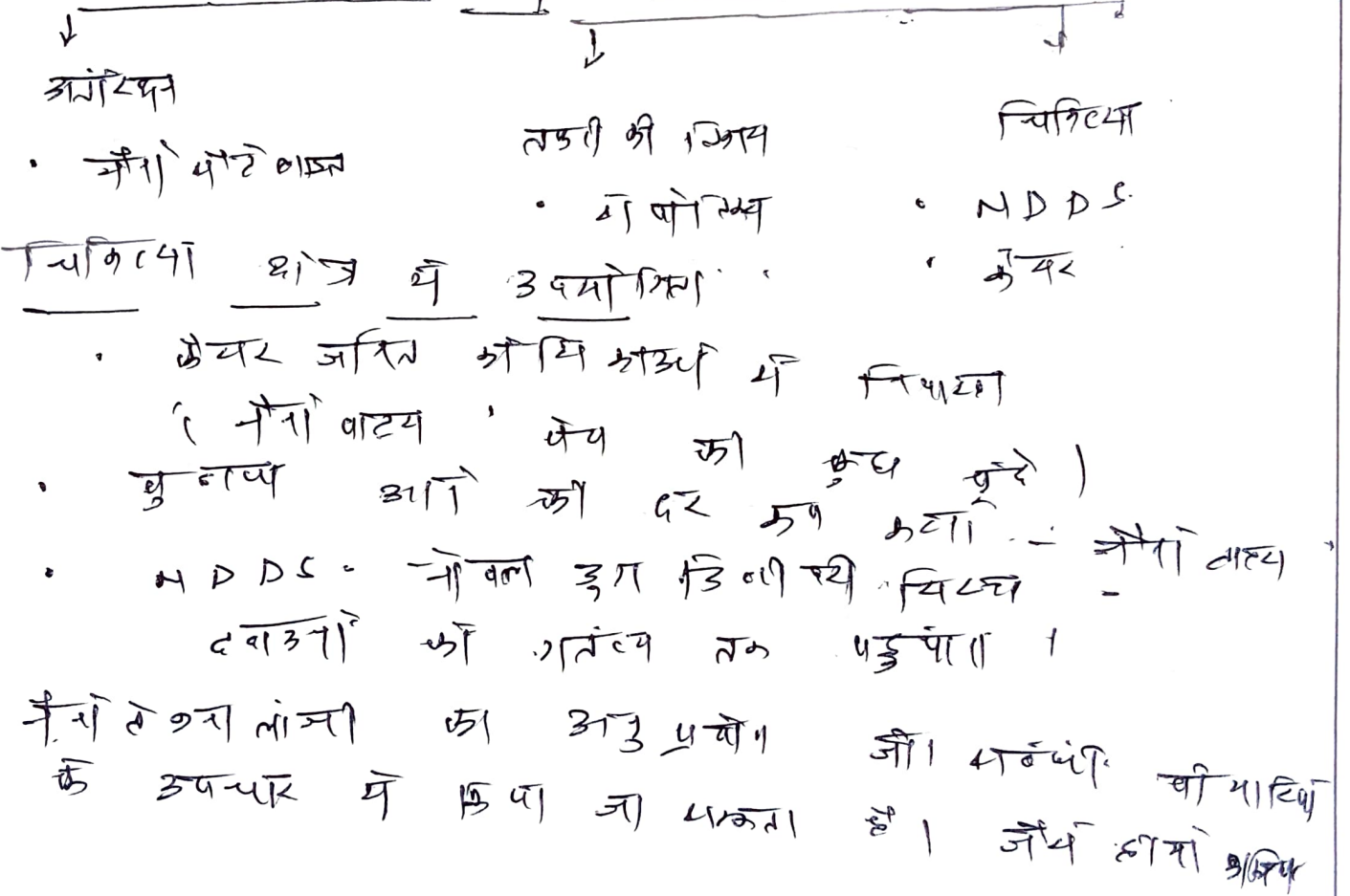
- वाहनों में ऊर्जा के रूप : गैसों द्वारा के रूप में वाहनों का परिचालन करने में प्रयोग।
- जेट इंधन - जेट इंजन के प्रयोग में. वायु यांत्रिक ऊर्जा के स्रोत के रूप में प्रयोग।
- डीजल इंधन - भारी वाहन इंज. तथा अदि में ऊर्जा के रूप में प्रयुक्त।
- भारी इंधन के उत्पादन में - उद्योगों में जल, कोयला, गैस आदि के निष्पत्ति में प्रयुक्त।

इनके अतिरिक्त मरुकर, प्राकृतिक गैस, ईंधन, अतिरिक्त पदार्थों के रूप में अन्य उद्योगों द्वारा उत्पादों के रूप में - पेट्रोलियम का प्रयोग होता है।

21] $6 \leq LV - MK - 3$ को 'आयन का अणुव्य' कहा जा सकता है।
यदि 'उद्योग' द्वारा विकसित 'उच्च प्रशिक्षण'।
क्षेत्रों वाला था है।

अंतरिक्षीय मातृ प्रवर्णी में नैरो का अर्थ
 मोटर का अर्थ है 'हिल्ला' माता 11वा है।
 उम्र आकार के कक्षा में नये नये नक्षी प्रकृति
 विद्युत संकेत ही पाया है।

नैरो रक्षा लक्ष्य
उपयोगिता



214] पैट्रो लिपम एक प्राकृतिक ईंधन है, जो श्रुपकृती के
 पड़ने नये आवधानी पदार्थों के बीच पाया जा
 वाला। यह 'हाइड्रोकार्बन' का अर्थ, गार्दे -
 भूरे रंग का तेलीय पदार्थ है।
 पैट्रो लिपम में विभिन्न अणु अणु जैविकी
 हाइड्रोकार्बन, आदि। जैविकी अणु।

2E] शिखर में ही शरीरिका एक आहुवाक वीर्य हो।
 ३५] शरीर का कवच हीरो, लोहि आणु की वीर्य (१)
 जलो वि शूलनो की वीर्य स्थिति में एक असीम शक्ति
 जूलनिक अक्ता का वती (Vitality) का प्रती लक्ष्य
 है।

उत्परि वरति हीरो लोहि आणु में वडली कवच हो वती
 है जिसके कवच रश्मि का आकार द्वि अक्ता स्थिति में
 वरकर 'वियपा' के आकार का हो जाता है।

उपचार की विधि

यिकता में ही शरीरिका में उपचार लक्ष्य किम लिमन
 चिकित्सा पद्धतियां अपापी जा रही है।

1. २ मों उपचार
2. ० लडें दाय ध्वजा
3. वीर्य में ही वरकर

३६] उपचारों के अतिरिक्त 'जीव वीर्य' भी एक वरकर
 अपापी है, जो शरीर में ही वरकर अपापी है।

2F] वलो कि का शाक्य अर्थ 'हयशक्ति' के वरकर अपापी
 वलो वरकर वीर्य जो कि वरकर है जो एक
 मात्र जाक (मात - वीर्य) में असीम शक्ति
 उत्पन्न होती है।
 उत्पत्ति वलो अपापी जाक में शरीर में वरकर अपापी
 वरकर में वरकर: वरकर वरकर है।
 अतः किसी जीव का प्रत्येक वरकर अपापी
 वलो कि वरकर है।

• पाई (A) के भा की रण।।

• डि कोमि गिति में व्युत्पन्न यादा प्रकृतों को

स्वयं ल शास्त्र :- पृथ्वी का धूर्त

• प-प्रगु र्ण
• धनुयर्षी

स्वयं ल :- तथा पकृ यंत्र का लिगय
आर्ष अरक्षय ग्रुपे 121 शरीर .

अनके योगदा 129 स्मृति एष को चिक शली -
स्वयं ल प्रदा करने के लिए यान में 3777 प्रकृत
स्वयं ल 3777 ' आर्षयुक्त ' उन्ही के गन पर था।

2 D]

अत्रः 1-गामी ग्रंथिया गलिडी विना टॉसी है।
अनके हाथ 1-गामि 129 प्रयर् हाको कड नाग है।
जो स्वत के माहयय में लिगय हासी है।
बहाल्लन के रूप में थावयड, पीशुष, विस्वसी प्रको
अत्रः 1-गामी ग्रंथियो की कार्य प्रणाली निम्न वर :-
कार्य प्रणाली

- हाको के नियमि, प्रवाल 129 नियमों का कार्य
- प्रनयन तत्र 129 अगों के लिगय में
- मनः स्थिति तथा व्यावहार्य सवाता में
- विस्वसी ग्रंथि मलिक्त के पदवोर में अथ
ग्रंथिया के इगार को नियंत्रित करना है।

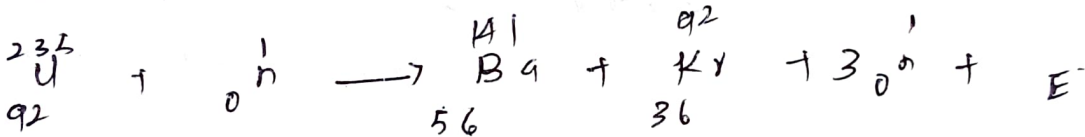
अत्रः 2-गामी ग्रंथिया जीव एडीम, प्रीमिपल, पाइक्य अथ
के माहयय में शारीरिक क्रियाओं का नियमि में अर्थात् गन ल

Q.2

2A] नाथी क्षीय तट्टीक का प्रयोग नाथी क्षीय नियन्त्रण एवं नाथी क्षीय यंत्रणा में किया जाता है। इसका प्रयोग अर्ज उत्पन्न एवं पदार्थु वय यन्त्रों में किया जाता है।

नाथी क्षीय नियन्त्रण वर प्रक्रिया है जिसमें एक बड़े नाथीक का छोटे छोटे नाथीक में विभक्त होता है। विभक्त की प्रक्रिया में अर्ज का निर्माण होता है।

उदाहरण -



- नाथी क्षीय अर्ज के विभाग में नाथी क्षीय नियन्त्रण की शक्ति
- नाथी क्षीय नियन्त्रण में प्रत्येक चरण में श्रृंखला चक्र स्थिति में उच्चतर उत्पत्ति होने रहने है जो आगे की अभिक्रिया - प्रचलित करने है।
- पदार्थु नियन्त्रण में नाथी क्षीय नियन्त्रण एवं अर्ज उत्पत्ति की जाती है।

2B] प्राचीन भारतीय उपमोक्ष शास्त्री आर्य भट्ट (1995 ई.)

में वर्तमान विश्व के कुचक्र में हुआ। वे गुप्त शासक चन्द्रगुप्त विक्रम तिल्य II के दरबार में रहते थे। अर्जित अर्ज उपमोक्ष शास्त्र के विषय में उन्होंने - अप्रतिष्ठा योगदान किया। निम्नलिखित शक्तियों के द्वारा योगदान -

1. अर्जित - आर्य भट्टीय नामक अर्जित की शक्ति को अर्जित के रूप में लिखे।

- चैंड विद्यु - उच्च आवृत्ति लया > निम्न आवृत्ति लया
- मापा - हर्ज (Hz)

11] चुंबकीय क्षेत्र में प्रति एकांक क्षेत्र कला में लगे हुए गुजरने वाली चुंबकीय चला रेखाओं का चुंबकीय प्रत्यक्ष कहा जाता है।

- उदाहरण मापांक : चक्र , w b
- चिह्न - ध.
- सूत्र - $\Phi = B \cdot A \cos \theta$

12] कार्बो सैल एक 'डू-मनेरी' मापित्रण उपकरण है।
 • उपयोग - तराश युक्ति उपयोग, शापण एवं धात्री अक्षय्येग
 • उपकरण - धातु नेतर्क नियंत्रण, जल निष्का, यंत्रण
 मजिस्त्र एड्स (Pek) - 2016.

13]

10] जो एक छवले प्रकाशक - धारण अथि धारिणी एवं जैव शापि -
 निष्ठी की धारणता में परि वर्तित उन्नत छवले है, जो
 कीन प्रतियेधी . उच्च उच्चतरता एवं सूक्ष्म जहरीप होती है।
 उदाहरण - बीबी कपाय

अनुभव करता है, विद्युत द्रोत करता है।
 • यह एक 'सिद्धि' सिद्धि है।

1J] सम्भावित दो आयत स्थिति यादृच्छिक पर्यवेक्षण की
 घटनाओं के घटित होने की माप (आन्तरिकता की माप)
 में है।

$P(E) = \frac{E \text{ के अक्षरों परमाणुओं की संख्या}}{\text{प्रयोग के सभी संभव परिणामों की संख्या}}$

1H] इन सैर 3DR इयर्थे गदा निर्मित एक मौखिक अणु
 है जो आन्तरिक आन्तरिक अणुओं प्रणाली अथ संवाकित है।
 • यह मौखिक एक आणविक तथा यत्न संवाकित अथ संवाकित में -
 स्थापित होगा।
 • लक्षित - वर्ष 2016

1I] जीव संश्लेषण में आयत स्थिति जीवों में स्थित जीव
 एक अकेले संभव की दृष्टि में है।
 • उपयोग - रोग गयी जीव की चरचा
 • अवस्था - आनुवंशिक बीमारियों की चरचा
 विकल संभव स्थिति में।

1J] प्रोटीन यह संभव प्रोटीन प्रणाली की एक संश्लेषण है जो
 • यह संभव 'संश्लेषण' में घटित होती है।
 • यह संभव चरणों में होती है :-
 1.

1K] वैंडरबल में तात्पर्य संश्लेषण तथ्यों की 'उच्चतम'
 एक उच्चतम 'आन्तरिक प्रणाली' में है।
 • संश्लेषित तथ्यों की आन्तरिक का स्थिति दर्शाता है।

D. 1 'Science Technology / Science / Maths'

1A] डी-एनए एवं एच डी-आरएनो सिस्टम के 'RNA' काव्यम होते हैं।

- ये चार प्रकार A, B, C, एवं D में पाये जाते हैं।
- खोप-य लक्षण - वृष्णक, धाँकी, श्या रिपा मे बल्ल्या इत्यादि
- बीबी - बड डनू

1B] बिक लक्षण एक योग्यत यौगिक होते हैं, जो जलीय विलया चमो- पर अपने संघटक आयनों में दूर जाते हैं।
उदाहरण - $FeSO_4$, योग्यत एवं K_2SO_4 , $Al_2(SO_4)_3$

1C] ए जियो ग्रीफी एक, इयै जिया तडीक है जो 'x' मध्य की लक्षणों से शरीर में शक व 'रक्त' बाहिरियों - ' आ प्रीकरण करता है।

- इ मेज को, एजियो ग्रुप कहा जाता है

1D] कापी राउर एक काशी आधारणा है जो क्रिया-मूल कार्य के लिये उमके मृजा कर्ता को विशेषाधिकार प्रदा करता है।

- कापी राउर के संरक्षण, लंपकी हेतु 1 कापी राउर अधि वि-1957, बनाया गया है।
- कापी राउर के कुल दोष - कला, माहिल, मीत अदि।

1E]

1F] क्रिया विभूत आरथ के चाये तरफे का चर दोउ जियये कोइ अन्य आरथ आरुमता या प्राति करवा करी का